आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 11 अंक : 6 फरवरी, 2024 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

75 वें गणतंत्र दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग द्वारा दिये गये उद्बोधन के अंश

आप सभी को राजुवास परिवार की ओर से 75वें गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाऐं। 26 जनवरी, 1950 को हमारे देश का संविधान लागू हुआ। 1947 में देश की आजादी के बाद हमें 26 जनवरी 1950 के पूर्ण गणतन्त्र की संज्ञा मिली। हमें कई दशकों से अधिक समय तक परतन्त्रता झेलने के बाद अपने विचारों की, अपने कर्तव्यों की अपनी संस्कृति की एवं अपने अधिकारो की स्वतंत्रता को प्रकट करने का अवसर प्राप्त हुआ। हमें इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए की भारत देश को एक पूर्ण स्वतन्त्र गणराज्य बनाने में देश के लाखो स्वतन्त्रता सेनानियों, माताओं, बहनों द्वारा अमूल्य त्याग एवं जीवन का बलिदान दिया है। इन सब वीरों एवं वीरागनाओं का स्वप्न भारत को एक धर्म निरपेक्ष, अखण्ड, स्वतन्त्र, उन्नत एवं उत्कृष्ट राष्ट्र बनाने का था। आज हम सबका ना केवल यह कर्तव्य है, अपितु उत्तरदायित्व भी है कि हम देश की अखण्डता, संस्कृति एवं सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्य बनाये रखें। वर्ष 2023 भारतवर्ष के लिए विशेष गौरव का वर्ष रहा है। भारत ने जी–20 देशों की प्रेसिडेंसी को बखूबी निभाया तथा पूरे विश्व को "वसुधैव कुटुम्बकम" का संदेश दिया तथा भारत की गौरवमयी प्रगति के दर्शन कराये। भारतवर्ष का ही प्रयास था कि वर्ष 2023 के अर्न्तराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष घोषित कराया। इसी प्रकार से चन्द्रयान–3 का सफलतापूर्वक चन्द्रमा के दक्षिण ध्रुव की सतह पर 23 अगस्त 2023 को उतर कर हमारी वैज्ञानिकों की सीमित संसाधनों में वह करने की शक्ति व इच्छा शक्ति दर्शाता है जो विश्व में कहीं नही है। इसी प्रकार से 22 जनवरी 2024 को शान्तिपूर्वक तथा पूरे उत्साह, उल्लास, गरिमा एवं धर्म आधारित संपूर्ण मर्यादाओं का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए श्री रामलल्ला को उनके भव्य मंदिर में स्थापना से भारत ने विश्व में भाईचारे व सद्भावना की मिसाल कायम की है। इन सभी उपलब्धियों एवं गौरव–गाथाओं के लिए सभी भारतवासियों को काटि–कोटि बधाईयां। मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि विश्वविद्यालय में लम्बे समय से चल रही मानव संसाधन की कमी को पूर्ण करते हुए विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न पदों पर साक्षात्कार आयोजित कर कुल 48+12 सहायक आचार्य एवं समकक्ष पदों पर वेटरनरी कॉलेजों, पशु अनुसंधान केन्द्रों एवं पशु विज्ञान केन्द्रों में नियुक्तिया प्रदान कर दी गई है। विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, आई.सी.ए.आर. की और बी.एस.एम.ए. एवं यू.जी.सी. की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए नवीन संशोधित "पी.जी. एकेडमिक रेगुलेशन–2023" को लागू कर दिया गया है। विश्वविद्यालय हमेशा से ही पशुपालकों के आर्थिक उत्थान हेतु कार्य कर रहा है। इस वर्ष कुल 811 प्रशिक्षणों का आयोजन कर 19255 पशुपालकों एवं किसानों को लाभांवित किया गया। भविष्य में ग्रामीण युवाओं को गो उत्पादों के मूल्य संवर्द्धन आधारित प्रशिक्षणों को बढ़ावा दिया जायेगा। विश्वविद्यालय का उद्देश्य पशुपालकों के हितों को सर्वोपरि रखते हुए पशुचिकित्सा सेवा सुदृढ़ीकरण एवं नवाचारों के माध्यम से प्रदेश में पशुचिकित्सा एवं पशुपालन को उत्कृष्ट शिखर पर पहुँचाना हैं। देश के अमर शहीदों, संविधान निर्माता एवं देश उत्थान के लिए कार्य करने वाले विद्वानों को पुण्य स्मरण के करने हुए पुनः गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ। जय हिन्द!

माननीय पशुपालन मंत्री श्री जोराराम जी कुमावत से कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग की शिष्टाचार भेंट

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

गौशाला प्रबंधकों एवं डेयरी संचालकों के तीन दिवसीय प्रशिक्षण

गौ संरक्षण एवं गौ सवंर्धन विश्वविद्यालय की प्राथमिकता : कुलपति प्रो. गर्ग

निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास बीकानेर एवं निदेशालय गोपालन, राजस्थान, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में पंजीकृत गौशालाओं के प्रबंधकों एवं डेयरी संचालकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 18–20 जनवरी को आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि राज्य सरकार ने गौसंरक्षण एवं गौसर्वधन को हमेशा प्रथामिकता दी है तथा वर्तमान की आवश्यकता है। गौशालाओं को उन्नत वैज्ञानिक प्रशिक्षण, गौउत्पादों के मूल्य संवर्धन एवं गौशालाओं को मिलने वाले अनुदान में बढ़ोतरी करके इनको स्वावलम्बी बनाया जा सकता है। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि गौपालन, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था का मूख्य आधार है पशुपालक गायों को उत्पादकता कम होने खुले में छोड़ देते है या गौशालाओं में छोड़ आते है, ऐसी स्थिति में गौशालाओं को स्वावलम्बी बनाने के हर सम्भव प्रयास करने चाहिए। अध्यक्ष गौग्राम सेवा संघ सूरजमाल सिंह निमराना ने कहा कि गोपालकों के वैज्ञानिक विधि से प्रशिक्षण से उन्नत गोपालन हेतु मार्ग प्रशस्त होगा। समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. ए.साहू निदेशक राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान संस्थान, बीकानेर ने कहा कि राज्य में गौशालाएं, गौ संरक्षण एवं मानव कल्याण कार्य कर रही है। गौशालाओं के समुचित उत्थान हेतु हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। मुरली मनोहर गौशाला एवं लोट्स डेयरी, महाविद्यालय डेयरी फार्म का भ्रमण करवाया गया। प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ जिलों के 36 गौशाला संचालको ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। समन्वयक डॉ. मनोहर सैन एवं सह–समन्वयक डॉ. संजय सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया।

गौशाला प्रबंधकों एवं डेयरी संचालकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण

गोपालन सेवार्थ के साथ साथ परमार्थ का कार्य है : स्वामी विमर्शानन्दगिरिजी महाराज

निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास बीकानेर एवं निदेशालय गोपालन, जयपुर, राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में पंजीकृत गौशालाओं के प्रबंधकों एवं डेयरी संचालकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 29–31 जनवरी तक आयोजित किया गया। समापन सत्र में मुख्य अतिथि स्वामी श्री विमर्शानन्दगिरिजी महाराज ने कहा कि गाय हमेशा से ही कृषि एवं ऋषि तंत्र का हिस्सा रही है। गौशालाओं का संचालन सेवार्थ के साथ साथ परमार्थ का कार्य है, इसे और प्रभावी करने की जरूरत है ताकि कि गौशाला के साथ साथ आप भी गौमय हो जाए। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि गौशालाओं का उन्नत एवं स्वावलम्बी होना अत्यंत आवश्यक है। गौशालाओं को वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। राज्य में गौशालाएं देशी गौवंश संरक्षण का प्रमुख केन्द्र है यदि हमें गौ संरक्षण को महत्व देना है तो गौशालाओं के उत्थान को प्राथमिकता देनी होगी। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण में विषय विशेषज्ञों द्वारा गौशाला संचालकों को उन्नत गौपालन के विभिन्न आयामों उन्नत प्रबंधन, आहार, रोग निदान, स्वास्थ्य पर प्रशिक्षण दिया गया। संयुक्त निदेशक पशुपालन विभाग, बीकानेर डॉ. एस.पी. जोशी ने कहा कि गौशाला प्रबंधक पशुपालन विभाग एवं विश्वविद्यालय के साझा कार्यक्रमों का हिस्सा बनकर गौ प्रबंधन के वैज्ञानिक तरीकों को सीख सकते है तथा गौशालाओं के आर्थिक उत्थान में सहयोगी बन सकते है। अध्यक्ष गौ–ग्राम सेवा संघ सूरजमल सिंह नीमराना ने भी गौशाला संचालकों को संबोधित कर धन्यवाद दिया। प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ जिलों के 34 गौशाला संचालको ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। समन्वयक डॉ. मनोहर सैन एवं सह–समन्वयक डॉ. संजय सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय ने मनाया 75वां गणतंत्र दिवस कुलपति प्रो. गर्ग ने किया ध्वजारोहण

गणतंत्र दिवस के 75वें समारोह में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने विश्वविद्यालय प्रांगण में ध्वजारोहण कर सलामी दी। समारोह में विद्यार्थियों एवं कर्मिको ने देश भक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी। कुलपति प्रो. गर्ग ने सभी को 75वें गणतंत्र दिवस की बधाई देते हुए कहा कि आज का यह पावन दिवस हमें देश के लाखों वीरों एवं वीरांगनाओं के अमर बलिदान स्वरूप प्राप्त हुआ है यह हमारा कर्तव्य है कि हम सत्य, निष्ठा और इमानदारी से अपने कार्यों का निर्वाह करते हुए देश की एकता, अखण्डता एवं संस्कृति को अक्षुण्य बनाए रखे तथा देश के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान में अपना पूर्ण सहयोग दे। कुलपति प्रो. गर्ग ने वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के प्लेटीनम जुबली वर्ष के अवसर पर महाविद्यालय के एल्यूमिनाई द्वारा ज्ञान एवं अनुभवो की व्याख्यान श्रृंखला की सराहना की। कुलपति प्रो. गर्ग राज्य के ग्रामीण युवा, कृषक महिलाओं, लघु एवं सीमांत कृषकों तथा पशुपालकां के कौशल विकास हेतु विश्वविद्यालय के विभिन्न इकाईयों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को पशुपालकों कि आर्थिक उत्थान हेतु सहायक बताया। कुलपति ने विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों, उच्च अध्ययन हेतु अन्य विश्वविद्यालय चयनित विद्यार्थियो को बधाई दी। कुलपति प्रो. गर्ग एवं फैकल्टी सदस्यों ने इस अवसर पर पौधा रोपण भी किया।

विद्यार्थियों के रोजगार संभावनाओं पर प्रेरक व्याख्यान

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा 18 जनवरी को विद्यार्थियों हेतु प्रेरक व्याख्यान का आयोजन किया गया। अमेरिका प्रवासी प्रो. भानु पी. चौधरी, प्रख्यात वैज्ञानिक एवं एल्यूमिनाई ने वेटरनरी क्षेत्र में विद्यार्थियों के रोजगार संभावनाओं विषयों पर एक प्रेरक व्याख्यान दिया। प्रो. चौधरी ने विद्यार्थियों से अपने जीवन के शिक्षा, अनुसंधान के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि वेटरनरी विद्यार्थियों हेतु रोजगार की अपार संभावनाएं हैं, विद्यार्थी डिग्री काल में नियमित पाठ्यक्रमों के साथ–साथ लघु सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम भी हासिल कर सकते है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि किसी महाविद्यालय द्वारा अपने एल्युमिनाई को सफलता के शिखर पर देखना बड़े ही गर्व की बात है। अध्ययनरत विद्यार्थियों को एल्युमिनाई के अनुभवों का लाभ उठाते हुए अपने प्रोफेशनल स्कील को बढ़ाना चाहिए। विद्यार्थियों को वेटरनरी क्षेत्र में रोजगार के सभी विकल्पों को चुनना चाहिए। वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के अधिष्ठाता, प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि महाविद्यालय के गोल्डन जुबली ईयर के तहत विद्यार्थियों हेतु विभिन्न व्याख्यानों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा।

अंतर्राष्ट्रीय ऊंट उत्सव पर विश्वविद्यालय प्रदर्शनी का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय ऊंट उत्सव के तहत बीकानेर में कृषि सबंद्व समस्त संस्थानों/केन्द्रों/विश्वविद्यालयों आदि की उन्नत वैज्ञानिक तकनीकी सबंधी जानकारी पर्यटकों व आमजन के समक्ष प्रदर्शित करने के प्रयोजनार्थ दिनांक 13 जनवरी, 2024 को राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर में प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन कि वैज्ञानिक तौर–तरीको को माडॅल, चार्टस, पैनल्स, रगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया साथ ही पशुपोषण की उन्नत तकनीकों जैसे संतुलित पशु आहार बनाना, अजोला उत्पादन, यूरिया मोलासेस मिनरल ब्लॉक बनाने की विधि व मॉडल का सजीव प्रदर्शन भी किया गया। विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी का संभागीय आयुक्त, बीकानेर श्रीमती उर्मिला राजोरिया सहित विभिन्न जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों द्वारा अवलोकन कर सराहना की। इस अवसर पर प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास ने विश्वविद्यालय गतिविधियों से अवगत करवाया।

स्वामी विवेकानंद जयंती कार्यक्रम

राष्ट्रीय युवा दिवस पर 12 जनवरी को वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर में स्वामी विवेकानंद जी की जयंती के अवसर पर विवेकानंद जी की मूर्ति पर माला एवं पुष्प अर्पित किये गये। वेटरनरी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने स्वामी विवेकानंद जी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए उनके जीवन आदर्शों से प्रेरणा लेने हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित किया। प्रो. हेमंत दाधीच उप कुलपति वेटरनरी विश्वविद्यालय ने बताया कि स्वामी विवेकानंद जी के जीवन मूल्यों एवं जीवन आदर्शों पर उनको जगत गुरू की संज्ञा दी गई है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में समाज सेवक चंपेश कुमार ने स्वामी जी के जीवन काल के प्रेरक प्रसंगों का बखान करते हुए विद्यार्थियों को त्याग, समर्पण, देश भक्ति, राष्ट्र निर्माण, चरित्र निर्माण एवं आदर्श आचरण को अपनाते हुए जीवन जीने के लिए प्रेरित किया।

नव शिक्षित पशुचिकित्सकों ने ली शपथ

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के वर्ष 2018 बैच के छात्र–छात्राओं का शपथ ग्रहण समारोह 27 जनवरी को महाविद्यालय के फेकल्टी हाऊस में किया गया। कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने छात्र–छात्राओं को एक स्वास्थ्य परिकल्पना पर कार्य करते हुए पशु कल्याण के लिए कार्य करने का आव्हान किया। कुलपति ने कहा कि पशु चिकित्सा का क्षेत्र न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करता है बल्कि यह मानवता के प्रति दया–भाव का संदेश भी देता है तथा इस क्षेत्र में भी असीम संभावनाएं है जिन्हें नव शिक्षित पशुचिकित्सक अपनी रूचि के अनुसार चुन सकते है। इस अवसर पर महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. ए.पी.सिंह ने 64 छात्र–छात्राओं को पशु चिकित्सा की शपथ दिलवाई।

मुकाम में पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं पशुपालन विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में राज्य सरकार की 100 दिन की कार्य योजना के अंतर्गत मंगलवार को मुकाम ग्राम पंचायत में पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने कहा कि पशुओं में होने वाली विभिन्न संक्रामक बीमारियों एवं अन्य विकारों के कारण पशुओं को उत्पादन क्षमता में गिरावट आती है। जिससे पशुपालकों को सीधा–सीधा आर्थिक नुकसान झेलना पड़ता है। गांव ढाणियों में पशुचिकित्सा शिविरों के माध्यम से हम काफी हद तक पशुपालकों को इन समस्याओं से निजाद दिला सकते है। निदेशक क्लिनिकस प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि इस शिविर में कुल 206 पशुओं का सर्जिकल, ग्यनाकोलॉजिकल एवं मेडिसिनल बीमारियों का ईलाज किया गया एवं 498 कुपोषित पशुओं में पाइका रोग ईलाज हेतु मिनरल मिक्सचर पशुओं को दिया गया। शिविर के दौरान रेस्क्यू किये गये घायल वन्य जीवों का भी ईलाज किया गया। शिविर के दौरान पशुपालकों को विभिन्न संक्रामक एवं उपापचय बीमारियों से बचाव हेतु सलाहकारी सेवाएं भी प्रदान की गई।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला में विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम

भारत सरकार की विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम के तहत दिनांक 15 जनवरी को गाढ़वाला में राजुवास विश्वविद्यालय की ओर से प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन कि वैज्ञानिक तौर–तरीको को माडॅल, चार्टस, पैनल्स, रगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया। विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान विश्वविद्यालय की गतिविधियों से सम्बन्धित प्रसार सामग्री व पशुपालन नए आयाम मासिक पत्रिका का वितरण किया गया। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक डॉ नीरज कुमार शर्मा, डॉ. संजयसिंह, सहायक निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास उपस्थित रहें।

गाढ़वाला में प्रौढ़ साक्षरता पर संगोष्ठी

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 31 जनवरी को राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय विद्यालय में प्रौढ़ साक्षरता विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज के युग में मनुष्य का साक्षर होना बहुत जरूरी है। शिक्षा एवं साक्षरता ना केवल मनुष्य का अपितु पूरे देश के उत्थान में सहायक है। विद्यार्थियों को अपने पड़ोस एवं घर में बुजुर्गो एवं निरक्षर युवाओं को साक्षर करने हेतु प्रेरित करना चाहिए। कार्यवाहक प्रधानाचार्य दिनेश सुथार ने भी विद्यार्थियों को साक्षरता का महत्व बताते हुए प्रेरित किया। इस अवसर पर विद्यालय के समस्त शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 6, 8, 16, 18, 20 एवं 27 जनवरी को गांव कालवासिया, शिमला, जैतासर, साडासर, भानीपुरा एवं पुनसीसर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 163 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 4, 12 एवं 27 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण एवं 6 जनवरी को गांव अमरपुरा गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 4, 6, 8, 10, 11, 12, 16 एवं 18 जनवरी को गांव सिनसिनी, सेंहती, सुपाबस, मुंकन्दपुरा, अऊ, नंगला चाहर, सिकरोरी एवं बिलावटी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 139 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6 जनवरी को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 8, 12, 18 एवं 22 जनवरी को गांव पाकरी, भारावटी, मेहरिया एवं खानपुर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 8 एवं 12 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर, दिनांक 20 एवं 25 जनवरी को केन्द्र परिसर तथा दिनांक 10 एवं 16 जनवरी को गांव ढाणी भोपालाराम एवं बेलासर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 179 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 6, 8, 20 एवं 23 जनवरी को गांव मोयली, ऊड, बाडेली एवं धान्तागांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 97 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 1, 2, 6, 8, 10, 12, 16, 19, 20, 22, 23, 25, 27 एवं 29 जनवरी को गांव पाहन, समना, बिठूड़ा, जसवन्तगढ़, मिठडी, आसपुरा, रिंगण, लूकास, हिरावती, सूनारी, जहकरिया, कृषणपूरा, हुडास एवं ओडीट गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 264 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 8, 11, 19 एवं 24 जनवरी को गांव कराडिया, नयागांव, भीमपुरा, कैथून एवं बंधा गांवों में तथा दिनांक 16 एवं 23 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 169 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 5 एवं 8 जनवरी को ऑनलाईन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 52 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 5, 6 एवं 11 जनवरी को ऑनलाईन एक दिवसीय एवं दिनांक 18 एवं 20 जनवरी को गांव चांदसेन एवं आमली गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 95 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 6, 9, 10, 20, 24 एवं 27 जनवरी को गांव गोल, घाटीफलां, खरोडीया, जोगीवाडा, सुलई नीचली सागड़ा, पाईला घाटी गांवों में तथा दिनांक 18 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 210 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 9, 11 एवं 18 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन एवं 25, 27 एवं 29 जनवरी को गांव निवाई, देलसर एवं डाबली में तथा 13 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 146 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा 2, 8, 18 एवं 29 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 151 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा 4, 6, 8, 9, 12, 16, 20, 23, 27 एवं 30 जनवरी को गांव पचकोडिया, मच्छरखानी, भोजपुरा, जोबनेर, मण्डाभिम, हरसोली, जैलपुरा, कुमावतो की ढाणी, लालपुरा एवं अम्मीपुरा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों 245 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 1, 5, 12, 27 एवं 30 जनवरी को गांव पावती, सोमता, सिकवारा, चंदूर एवं रामसीन गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 71 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर–पाली

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर (पाली) द्वारा 1, 6, 11 एवं 19 जनवरी को गांव गुढाहिमता, पनोता, सांसारी एवं आशापुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 35 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 27–30 जनवरी को केन्द्र परिसर में चार दिवसीय एवं दिनांक 29 एवं 30 जनवरी को गांव चांदेरी छोटी एवं गोगामेडी में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 74 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

दूध के मूल्यवर्धन से होगी किसानों की आमदनी में वृद्धि

किसानों की आय दोगुनी करना एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है जिसे कई कृषि नीतियों और पहलों द्वारा हासिल किया जाना है। डेयरी क्षेत्र में मूल्यवर्धन, विशेष रूप से दूध के प्रसंस्करण में, किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसानों की आय दोगुनी करने के लिए दूध में मूल्यवर्धन बहुत महत्वपूर्ण है, जिसके लिए निम्नलिखित सिद्धांतों का पालन किया जाना जरूरी है।

डेयरी उत्पादों का विविधीकरणः मूल्य संवर्धन बुनियादी दूध से परे डेयरी उत्पादों की एक विविध श्रृंखला है। इसमें दही, पनीर, मक्खन, घी, आइसक्रीम और बहुत कुछ जैसे उत्पाद शामिल हैं। उत्पाद श्रृंखला में विविधता लाकर, किसान अपने ग्राहक आधार का विस्तार करते हुए विभिन्न उपभोक्ता प्राथमिकताओं और बाजार क्षेत्रों का लाभ उठा सकते हैं।

बढ़ी हुई शेल्फ लाइफः दूध को विभिन्न डेयरी उत्पादों में संसाधित करने में अक्सर ऐसे तरीके शामिल होते हैं जो इसकी शेल्फ लाइफ को बढ़ाते हैं। इससे न केवल बर्बादी कम होती है बल्कि किसानों को खराब होने के जोखिम के बिना अपने उत्पादों को दूर के बाजारों में आपूर्ति करने की सुविधा भी मिलती है। लंबी शेल्फ लाइफ किसानों के लिए अधिक स्थिर और सुसंगत आय में योगदान करती है।

उच्च लाभ मार्जिनः मूल्यवर्धित डेयरी उत्पाद आम तौर पर कच्चे दूध की तुलना में बाजार में अधिक कीमत पाते हैं। उदाहरण के लिए, पनीर या दही पर लाभ मार्जिन अक्सर कच्चे दूध की तुलना में अधिक होता है। उत्पादित दूध की प्रति यूनिट यह बढ़ा हुआ मूल्य सीधे तौर पर किसानों की उच्च आय में योगदान देता है।

बाजार पहुंच और मांगः प्रसंस्कृत डेयरी उत्पादों में अक्सर व्यापक बाजार अपील होती है, जो सुविधा और विविधता के लिए उपभोक्ताओं की प्राथमिकताओं को पूरा करती है। यह बढ़ी हुई मांग, अधिक विस्तारित अवधि में उत्पादों की आपूर्ति करने की क्षमता के साथ मिलकर, किसानों के लिए बाजार पहुंच को बढ़ाती है। उपभोक्ता रुझानों के साथ तालमेल बिठाकर, किसान अपने उत्पादों को बाजार की मांगों को पूरा करने के लिए रणनीतिक रूप से तैयार कर सकते हैं।

रोजगार के अवसरः डेयरी क्षेत्र में मूल्य संवर्धन के लिए अतिरिक्त प्रसंस्करण सुविधाओं की आवश्यकता है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा होंगे। डेयरी प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना से रोजगार सृजन हो सकता है, जिससे क्षेत्र के आर्थिक विकास में योगदान मिलेगा। यह, बदले में, किसानों की आय बढ़ाने के समग्र लक्ष्य का समर्थन करता है।

कौशल विकास और प्रशिक्षणः मूल्य संवर्धन में संलग्न होने के लिए, किसानों को प्रसंस्करण और उत्पाद विकास से संबंधित कौशल हासिल करने की आवश्यकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम और कौशल विकास पहल किसानों को उनकी उपज का मूल्य बढ़ाने के लिए सशक्त बना सकते हैं। इससे न केवल उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार होता है बल्कि किसानों को अपने डेयरी उत्पादन में मूल्य जोड़ने के नवीन तरीके तलाशने में भी मदद मिलती है।

गुणवत्ता मानक और प्रमाणनः मूल्य–वर्धित उत्पादों को अक्सर कुछ गुणवत्ता मानकों और प्रमाणपत्रों को पूरा करने की आवश्यकता होती है, खासकर यदि वे निर्यात बाजारों के लिए हों। इन मानकों का पालन न केवल उत्पादों की सुरक्षा और गुणवत्ता सुनिश्चित करता है, बल्कि किसानों के लिए प्रीमियम बाजारों तक पहुंचने के अवसर भी खोलता है, जिससे उनकी उपज के लिए उच्च कीमतें मिलती हैं।

सरकारी सहायता और प्रोत्साहनः सरकार वित्तीय प्रोत्साहन, सब्सिडी और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए सहायता प्रदान करके डेयरी क्षेत्र में मूल्यवर्धन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। ऐसी नीतियां जो डेयरी प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना को प्रोत्साहित करती हैं और मूल्यवर्धित उत्पादन में परिवर्तन करने वाले किसानों को सहायता प्रदान करती हैं, किसानों की आय को दोगुना करने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। डेयरी क्षेत्र में दूध का मूल्यवर्धन एक बहुआयामी दृष्टिकोण है जिसमें उत्पाद विविधीकरण, बेहतर बाजार पहुंच, बढ़ी हुई शेल्फ जीवन और बढ़ी हुई लाभप्रदता शामिल है। मूल्य संवर्धन को अपनाकर, किसान अपने डेयरी उद्यमों को अधिक टिकाऊ और आकर्षक उद्यमों में बदल सकते हैं, जो अंततः उनकी आय को दोगुना करने के व्यापक लक्ष्य में योगदान कर सकते हैं।

डॉ. महेन्द्र सिंह मील
सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर)

जैव विविधता का संरक्षण : मानव स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार

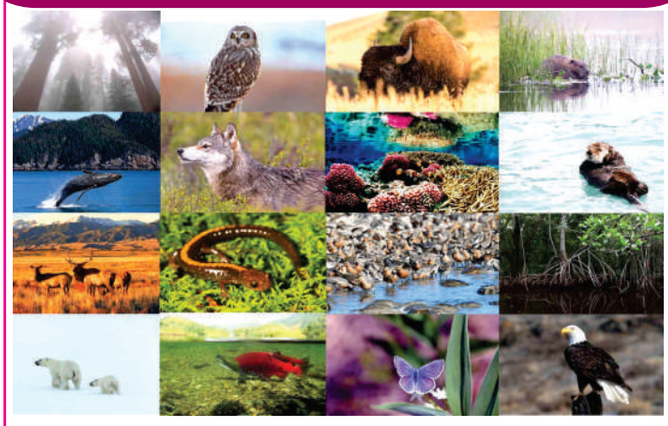

मानवता को भोजन, कपड़ा और घर देने की जरूरत ने अधिकांश पारिस्थितिक तंत्रों को बदल दिया है। प्रमुख मानवजनित प्रक्रियाओं में कृषि और शहरीकरण के लिए प्राकृतिक परिदृश्यों का परिवर्तन, आकस्मिक या नियंत्रित रूप से गैर–देशी प्रजातियों का परिचय और जंगली आबादी की प्रत्यक्ष कटाई शामिल हैं। इन गतिविधियों ने जैविक समुदायों की संरचना को बहुत बदल दिया है और वे कभी–कभी स्थानीय विविधता को कम करते हैं। पारिस्थितिक तंत्र को मानवीय गतिविधियों ने काफी प्रभावित किया है, जिसमें वनस्पति संरचना और माईक्रॉक्लाइमेट में बदलाव, पोषक तत्वों का चक्रण, जल शुद्विकरण और संक्रामक रोगों का जन्म शामिल है। संक्रामक रोगों के संचरण पर मानवजनित प्रक्रियाओं के प्रभाव ने पिछले दशक में जैव विविधता के एक साथ क्षरण और उभरती हुई रोग घटनाओं में वृद्वि के कारण पर्याप्त ध्यान आकर्षित किया है। यदि ये दोनों प्रक्रियाएं यथोचित रूप से जुड़ी हुई है तो जैव विविधता के संरक्षण से जूनोटिक रोग के जोखिम को कम करके मनुष्यों को लाभ हो सकता है। हालांकि जैव विविधता और जूनोटिक रोग जोखिम के बीच संबधों की कारणता और व्यापकता के बारे में सवाल उठाए गए हैं। एक बुनियादी सवाल यह है कि क्या संरक्षण हस्तक्षेपों से समग्र मानव कल्याण में वृद्वि होगी, जिसमें संक्रामक रोगों के कुल बोझ के साथ–साथ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण पर अन्य प्रभाव भी शामिल होगें। हम जैव विविधता संरक्षण हस्तक्षेपों का विश्लेषण करते हुए दो सबसे आम तरीकों पर विचार करते हैं, प्रजातियों का पुनरूत्पादन और निवास स्थान संरक्षण बहाली या परिवर्तन। पर्यावास संशोधन कभी–कभी विशिष्ट प्रजातियों को लक्षित कर सकता है और विभिन्न मेजबानों की संख्या में वृद्वि या कमी का करण बन सकता है। सामुदायिक समरूपता की कमी से विविधता मेट्रिक्स में वृद्वि हो सकती है। मनुष्य लगातार पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र को बदल रहा है। क्रमशः विकसित और तेजी से विकाशील दशों में उच्च और बढ़ते जीवन स्तर के परिणामस्वरूप अतिरिक्त भूमि का कृषि और शहरी क्षेत्र में रूपांतरण, उर्जा उपयोग में वृद्वि, जलवायु परिवर्तन और जैविक समरूपीकरण होता है, ये परिवर्तन नई चुनौतियां पेश करते हैं क्योकि जब मानव गतिविधियां प्राकृतिक क्षेत्रों में अतिक्रमण करती है तो एक रोगजनक वन्यजीवों से फैलते हैं। मानव कल्याण पर इन हस्तक्षेपों के प्रभावों और लागत प्रभावशीलता को सटीक रूप से निर्धारित करने से पहले ज्ञान में पर्याप्त वृद्वि की आवश्यकता है। यदि विविध समुदायों को मानव कल्याण के लिए शुद्व लाभ प्रदान करते हुए दिखाया जा सकता है तो पृथ्वी की शेष जैव विविधता के संरक्षण के लिए शक्तिशाली प्रेरणा प्रदान कर सकता है।

डॉ. नरसीराम एवं डॉ. मृणालिनी सारण
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुओं को मुंहपका-खुरपका से बचाएं

मुंहपका खुरपका रोग फटे खुर या दो खुर वाले पशुओं जैसे गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सुअर तथा अन्य जंगली पशुओं में होने वाला अत्यंत घातक व संक्रामक विषाणु जनित रोग है जो कि ऐफ्थोस नामक अत्यंत संक्रामक वायरस की वजह से होता है। यह रोग सभी उम्र के पशुओं में तीव्र गति से फैलता है। पशुओं में इस रोग से मृत्यु दर तो बहुत कम है, किन्तु मादा पशुओं में इस रोग की वजह से दुग्ध उत्पादन, गर्भधारण क्षमता व कार्य करने की क्षमता पर विपरित प्रभाव पड़ता है। संक्रमित पशुओं की कार्य क्षमता व उत्पादन क्षमता में कमी आ जाने के कारण पशुपालकों को अत्यधिक आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

रोग का फैलावः मुंहपका–खुरपका रोग का वायरस संक्रमित जानवरों के लार, मल, मूत्र के माध्यम से फैलता है, क्योंकि इस बीमारी में संक्रमित पशु के मुंह से अत्यधिक मात्रा में लार गिरती है जिससे उनके आस–पास का वातावरण संक्रमित हो जाता है। संक्रमित पशु के चारे–दाने, पानी के माध्यम से तथा हवा के माध्यम से भी इस रोग का फैलाव वातावरण में होता है। इसके अलावा संक्रमित पशुओं के दूध और मांस के माध्यम से भी यह रोग फैलता है।

रोग के लक्षणः

- रोगी पशु को तेज बुखार (104–106 डिग्री फेरेनहाइट) हो जाता है तथा पशु सुस्त रहने लगता है। संक्रमित पशुओं के मूंह से अत्यधिक मात्रा में लार गिरने लगती है।
- संक्रमित पशु के मूंह, जीभ व मसूड़ों पर छाले हो जाते है जो बाद में कटने की वजह से घाव हो जाते है। मूंह में घाव हो जाने के कारण पशु खाना–पीना बंद कम कर देता है तथा गंभीर मामलों में खाना–पीना बिल्कुल बंद कर देता है जिसके परिणामस्वरूप पशु के दुग्ध उत्पादन में अचानक से कमी आ जाती है। संक्रमित पशु के खुरों के बीच छाले हो जाते है जो बाद में घाव का रूप ले लेते है जिससे पशु ठीक प्रकार से खड़ा नहीं हो पाता है तथा लंगड़ा कर चलता है। इन घावों का सही समय पर ईलाज ना मिलने के कारण इनमें कीड़े पड़ जाते हैं।
- पशु के थनों पर भी छाले हो जाते है जिसकी वजह से संक्रमित पशु को थनैला रोग भी हो जाता है और पशु के दुग्ध उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- कुछ पशुओं में श्वांस लेने में तकलीफ होती है।
- छोटे अथवा कम उम्र के पशुओं में यह रोग और ज्यादा जानलेवा होता है, क्योंकि विकासशील मायोकार्डियम में यह वायरस क्षति पहुंचाता है जिसके कारण बछड़ों में मायोकार्डिटिस हो जाता है तथा छाले विकसित होने से पहले ही संक्रमित बछड़े की मृत्यु हो जाती है।

उपचारः

- चूंकि यह एक विषाणुजनित रोग है अतः इसका बचाव ही उपचार से ज्यादा उपयोगी है। उपचार लक्षण आधारित तथा पशुचिकित्सक की सलाह पर होना चाहिए।
- मुंह व खुर के छालों को प्रतिदिन दो बार (सुबह–शाम) लाल दवा या फिटकरी के हल्के घोल से साफ करना चाहिए।
- खुर के घावों में कीड़े पड़ने पर फिनाइल युक्त पानी से दिन में दो–तीन बार धोकर मक्खियों को दूर रखने वाली मलहम का प्रयोग करना चाहिए। लाल दवा उपलब्ध नहीं हो तो नीम के पत्ते उबालकर उसके ठंडे पानी से घावों को साफ करना चाहिए।

बचाव व रोकथामः

- इस रोग से बचाव हेतु छः माह के ऊपर के स्वस्थ पशुओं का टीकाकरण करवाना चाहिए उसके उपरांत 4 माह के अंतराल पर पशु को बुस्टर खुराक दिया जाना चाहिए और प्रत्येक 6 महिने में नियमित टीकाकरण करना चाहिए।
- रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए तथा संक्रमित पशुओं को सुपाच्य व मुलायम भोजन देना चाहिए।
- रोगी पशु की देखभाल करने वाले व्यक्ति को भी अपनी स्वच्छता का ध्यान रखना चाहियें।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

वैज्ञानिक तरीकों को अपना कर महावीर सिंह ने पशुपालन को दिया व्यवसाय का रूप

भरतपुर जिले के कुम्हेर तहसील के नगला मैथना गांव के रहने वाले 40 वर्षीय महावीर सिंह पुत्र धनीराम किसान परिवार से है, जिन्होंने पशुपालन को अपनी आजीविका का साधन बनाया। महावीर सिंह का परिवार शुरू से ही खेती तथा पशुपालन पर ही आश्रित था, लेकिन पिछले 7–8 वर्षो में पशुपालन पर ही अपना पूरा ध्यान केंद्रित किया तथा पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर द्वारा समय समय पर दिये गये प्रशिक्षणों को प्राप्त कर वैज्ञानिक तरीके से भेड़ पालन कर रहा है। पहले इनके घर में केवल आवश्यकता के अनुसार ही पशुपालन था परन्तु समय के साथ–साथ मांस एवं दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरुरत को ध्यान में रखते हुए भेड़ पालन को व्यवसाय के रूप में शुरू किया। महावीर सिंह का कहना है कि जितनी बचत उन्हें पशुपालन से हो रही है, उतनी कृषि से नहीं है। शुरुआत में इन्होने 10–15 भेड़ से की अब वर्तमान में महावीर सिंह के पास 80 भेड़ है। जिसमें से 70 मादा भेड़ एवं 2 नर भेड़ बाकि के मेमने हैं जिनसे प्रतिदिन 70 लीटर दूध का उत्पादन कर रहा है। इस दूध को वे 40 रुपये प्रति लीटर के हिसाब से बेचकर लगभग 2800 रूपये प्रतिदिन आमदनी कमा रहे है। प्रतिवर्ष ये 100–105 मेमने बेच देते हैं तथा प्रति मेमना 4000–5000 रुपये में बेचकर उनकी सालाना आय 4–4.5 लाख हो रही है। इस प्रकार महावीर सिंह लगभग 4.5– 5.0 लाख रुपये प्रतिवर्ष आमदनी प्राप्त कर लेते हैं। इनके पास लगभग 2 बीघा जमीन हैं जो कम होने के कारण हरा चारा अपने खेत में पैदा करते हैं बाकि सूखा चारा (भूसा) आदि को खरीदते भी हैं। महावीर सिंह समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भी भाग लेते है तथा व्यक्तिगत एवं दूरभाष पर जानकारी व समस्याओं के निवारण हेतु संपर्क करते है। इनके मन में हमेशा से ही पशुपालन सम्बन्धी ज्ञान अर्जित करने की जिज्ञासा रहती है। महावीर सिंह बताते है कि उन्हें पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षणों से काफी फायदा हुआ है। उन्होंने बताया कि उन्हें प्रशिक्षण से पशुपालन के क्षेत्र में नवीनतम व उन्नत तकनीकों की जानकारी वे अन्य पशुपालकों को भी देते हैं। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण की उपयोगिता, टीकाकरण, संतुलित आहार, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, मौसमी बीमारियों के बचाव एवं पशु बाँझपन की समस्याओं का प्रबंधन की जानकारी प्राप्त करते है। महावीर सिंह अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों एवं पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर को देते है।

सम्पर्क- महावीर सिंह पुत्र धनीराम
नगला मैथना, कुम्हेर, भरतपुर (मो. 9119127916)

निदेशक की कलम से...

पशुओं में नस्ल सुधार का प्रमुख साधन है कृत्रिम गर्भाधान

गौवंशीय पशुओं की संख्या में भारत विश्व में प्रथम स्थान रखता है। भारत में लगभग 37 प्रकार की गौवंश की नस्ले चिन्हित है तथा राजस्थान में भी देशी गौवंश की छः नस्ले चिन्हित है। वर्तमान परिदृश्य में इन नस्लों के पशुओं की संख्या में तेजी से कमी आ रही है जिसका मुख्य कारण इन नस्लों की उत्पादन क्षमता कम होना एवं कृषि के क्षेत्र में तेजी से मशीनीकरण शामिल है। इन नस्लों की उपयोगिता बढ़ाकर इनका संरक्षण व सवंर्द्धन करना आवश्यक है। पशु विकास हेतु नस्ल सुधार कार्य को सवौच्च प्राथमिकता दी जाती है ताकि पशुओं की उत्पादन क्षमता में वृद्वि कर अधिक लाभ प्राप्त कर सके। पशुओं में नस्ल सुधार के लिए उन्नत नस्ल के चुने हुए उच्च–कोटि के सांड़ से पशुओं का प्रजनन कराना चाहिए। राज्य सरकारों ने नस्ल सुधार के लिए कृत्रिम गर्भाधान तकनीक शुरू की है। इस तकनीक में उच्च गुणवत्ता वाले सांड़ो से वीर्य को कृत्रिम ढंग से एकत्रित, यंत्र की सहायता से गर्मी की उचित अवस्था में उचित स्थान पर पहुंचाना ही कृत्रिम गर्भाधान है। कृत्रिम गर्भाधान में एक सांड द्वारा एक वर्ष में 10,000 मादाओं में प्रजनन सम्भव है जबकि प्राकृतिक विधि से सांड़ों का उपयोग करके एक वर्ष में 60 से 100 पशुओं में ही प्रजनन संभव हो पाता है। इस विधि के द्वारा सामान्य उत्पादन वाले मादा पशुओं से भी उच्च गुणवत्ता की बछिया प्राप्त की जा सकती है तथा पशुपालक को सांड़ रखने की आवश्यकता नही होती है। इस तकनीक के माध्यम से उत्तम नस्ल के सांड़ के वीर्य को आसानी से गांव–गांव तक उपलब्ध कराया जा सकता है तथा नर से मादा में, मादा से नर में फैलने वाले प्रजनन सम्बन्धी रोगों से बचाया जा सकता है। राज्य सरकार की नस्ल सुधार हेतु कृत्रिम गर्भाधान पर जोर दे रही है। अभी हाल ही में राज्य सरकार ने भ्रूण स्थानान्तरण तकनीक भी शुरू की है। इस योजना के अन्तर्गत राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में भी भ्रूण प्रत्यारोपण प्रयोगशालाओं की स्थापना की जायेगी। अतः पशुपालक भाईयों को अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान करवाकर नस्ल सुधार करवाना चाहिए जिससे पशुपालक व्यवसाय से अधिक से अधिक आय अर्जित की जा सके।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया